विधवाओं के दर्द का अहसास कराती निराला की "विधवा" कविता

डॉ.सुनील गुलाबसिंग जाधव
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,
नांदेड-४३१६०५-महाराष्ट्र

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी की प्रसिद्ध कविता विधवा २७ अक्तूबर,१९२३ में कलकता की मतवाला साप्ताहिक में 'भारत की विधवा' नाम से प्रकाशित हुई थी | निराला रचनावली में वह 'विधवा'नाम से प्राकशित हुई |कवि विधवाओं के दर्द,दु:ख,पीड़ा को स्वयं महसूस कर, समाज को महसूस करवाकर समाज में विधवाओं की स्थिति में सुधार लाना चाहता हैं | कवि कविता में विधवाओं के जीवन को अलग नजरयें से देखता हैं | उसके दु:ख,पीड़ा को महसूस करता हैं और रुढि परम्परा से ग्रस्त समाज को उसका आइना दिखाते हैं | उसके दु:ख, पीड़ा से अवगत करा कर समाज में विधवाओं की शोचनीय स्थिति में परिवर्तन लाना चाहता हैं | तत्कालीन समय में विधवाओं के प्रति देखने का दृष्टिकोण अलग था | वह हजारों सालो से सतायी गई | अन्याय-अत्याचार से पीडत हैं | विधवा जीवन जीती स्त्री के लिए अच्छा खान-पान, वेश भूषा, बोलना, लिखना-पढ़ना आदि नहीं होता था | उलटे उसे केश कटवाकर,सफेद वस्त्र पहनाकर चार दिवारी के भीतर रखा जाता था | इतना ही नहीं उसे पुनर्विवाह का अधिकार नहीं था | स्त्री की प्राकृतिक इच्छाओं का दमन किया जाता था| उसे अशुभ,अमंगलकारी, कुलक्षणीआदि शब्दों के माध्यम से अपमानित किया जाता था | मानो वह मनुष्य ही नहीं, उसके साथ जानवरों-सा व्यवहार किया जाता था |

भरतीय धर्म में जहाँ स्त्री पूजनीय,सहनशील,माँ आदि रूपों में हैं, तो वहीं विधवा स्त्री का जीवन हैं | तत्कालीन समय में समाज सुधारकों द्वारा विधवाओं के जीवन को सुधारने का प्रयास किया | उनके पुनर्विवाह के लिए कार्य किया | ऐसे में परम्परा, सामजिक बन्धनों से ग्रसित समाज को सुधारने और उनका प्रतिबिम्ब उन्हें दिखाने के लिए कवियों एवं रचनाकारों ने अपने रचनाओं के माध्यम से यह कार्य किया | उसी में निराला जी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जा सकता हैं | आपने कुलिभाट उपन्यास हो या विधवा नामक कविता के माध्यम से विधवाओं के जीवन को एक नये नजरये से समाज के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए उन्हें समाज में सम्मान का दर्जा देने का प्रयास किया हैं |

सामजिक उपेक्षा का शिकार 'विधवा' कविता में कवि विभिन्न उपमाओं,प्रतिकों, बिम्बों के माध्यम से विधवा स्त्री के जीवन का चित्रण हृदय स्पर्शी रूप में करते हैं | विधवा स्त्री को दिगयी विभिन्न उपमा, विभिन्न प्रतिकों एवं अर्थ से युक्त हैं| जैसे :- इष्ट देव का मंदिर-पूजनीय का प्रतीक, दीप शिखा-शांत एवं पथ प्रदर्शक का प्रतीक, भाव में लीन-साधना का प्रतीक, क्रूर काल का ताण्डव- समाज के अत्याचार का प्रतीक,टूटे तरु की छुटी लता-बेसहारा का प्रतीक, दलित भारत की विधवा-पूर्वाग्रह दूषित सामजिक बंधनों में जकडन का प्रतीक, टूटी हुई कुटी-उपेक्षित,अकेले पन का प्रतीक आदि | निम्न बिन्दुओं के आधार पर हम यहाँ 'विधवा' कविता का अध्ययन कर सकते हैं,

1. विधवाओं के प्रति नया दृष्टिकोण
2. विधवाओं जीवन व्यथा की कथा
3. विधवाओं की इच्छा-आकांक्षा चित्रण
4. विधवाओं की पीड़ा का अहसास
5. विधवाओं का उपेक्षित जीवन
6. विधवाओं के प्रति समाज का दायित्व

1.विधवाओं के प्रति नया दृष्टिकोण :- कवि यहाँ विधवाओं के प्रति नया दृष्टिकोण अपनाते हुएवह समाज

के सम्मुख यह कहना चाहते है कि आप जैसा विधवाओं के बारें में अपनी राय रखते हैं, विधवा स्त्री वैसी नहीं हैं बल्कि वह प्रत्येक व्यक्ति के अराध्य ईश्वर के मंदिर की पूजा के समान श्रद्धेय और पवित्र और पूजनीय और सम्मान के योग्य हैं | वह सागर के किनारे ऊँचे स्थान पर अकेले खड़े दीप शिखा के समान शांत स्वभाव वाली हैं, जो हमेशा शांत भाव में साधना रथ रहती हैं | वह तो सदियों से समाज द्वारा सतायी गयी हैं | मानो वह प्रत्येक काल के क्रूर ताण्डव की स्मृति रेखा हैं | अन्याय और अत्याचार से ग्रसित वह विधवा स्त्री टूटे हुए वृक्ष की बेसहारा लता के समान दीन-दुखी और पीड़ित हैं| अर्थात उसका जीवन बेसहारा के रूप में व्यतीत होता हैं | यह तबतक चलता रहेगा जबतक वह कु रीति-परम्परा से युक्त समाज के जंजीरों में जकड़ी रहेगी तबतक उसकी यही अवस्था रहेगी | मानो वह दलित भारत अर्थात पराधीन भारत की विधवा स्त्री हैं | जिसे समाज के बंधनों से मुक्त करना होगा|

वह इष्ट देव के मंदिर की पूजा-सी
वह दीप-शिखा-सी शांत,भाव में लीन,
वह क्रूर काल-ताण्डव की स्मृति-रेखा-सी
वह टूटे तरु की छुटी लता-सी दीन-
दलित भारत की ही विधवा है |1

२.विधवाओं जीवन व्यथा की कथा :-

विधवा स्त्री हमेशा समाज के बन्धनों से युक्त पराधीनता की जंजीरों में जकड़ी रही | उसके लिए नियम बनायें गये | उसे उस नियमो का पालन करना आवश्यक था | उसे वह तोड़ नहीं सकती थी | स्वाधीन हो कर स्वछन्द, मुक्त रूप में जीवन जीना उसके नसीब में नहीं था | वह मात्र कल्पना लोक में ही स्वच्छन्द मुक्त जीवन जीने के सपने ही देखा करती थी | इसीलिए कवि उसकी इस व्यथा की कथा को अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं,

षड-ऋतुओं का श्रृंगार
कुसुमित कानन में नीरव-पद-संचार
अमर कल्पना में स्वछन्द विहार-
व्यथा की भूली हुई कथा है,
उसका एक स्वप्न अथवा है |2

छह ऋतुओं में बसंत ऋतु प्रकृति का श्रृंगार होता हैं | इस समय सारे कानन,जंगल या मानव निर्मित बागीचे फूलों से भर जाते हैं | स्त्री उस सौन्दर्य मय स्थान पर विचरण करना चाहती हैं किन्तु वह वहाँ भी भय से बिना पैरों की आवाज किये विचरण करती हैं | वह मुक्त, स्वच्छन्द हो कर मात्र अमर कल्पना में ही विचरण कर सकती हैं | वह मानो सबकुछ चुपचाप सहन करती हैं| कवि को प्रत्येक विधवा स्त्री का जीवन व्यथा से भरा हुआ लगता हैं | जो व्यथा की कहानी बयान करती हैं |

३.विधवाओं की इच्छा-आकांक्षा चित्रण :-

प्रत्येक स्त्री के जीवन का एक मधुर स्वप्न होता हैं| उसके बलहीन हाथों का एक सहारा उसका पति या उसका विवाह एवं वैवाहिक जीवन| उसे अपने जीवन रूपी धन में सपनों का राजकुमार मिले इसलिए वह सपने देखती हैं | किन्तु उसके खो देने पर या मर जाने पर स्त्री का खुशियों से भरा जीवन रूपी धन मानो छीन लिया जाता हैं |उसे सिर्फ एक बार ही अपने जीवन में विवाह का अवसर प्राप्त हुआ | उसे फिर से ऐसे सपने देखने का या पुनर्विवाह का कोई अधिकार नहीं | उसके सामने एक लम्बा जीवन पड़ा होता हैं | जो ध्रूवतारा के रूप में उसके जीवन में अटल होता हैं| और जीवन भर उसके हिस्से में मात्र करुणा की धारा बहते रहती हैं | अर्थात उसका सम्पूर्ण जीवन व्यथा और पीड़ा से भर जाता हैं |

उसके मधु-सुहाग का दर्पण
जिसमें देखा था उसने
बस एक बार बिम्बित अपना जीवन-धन,
अबल हाथों का एक सहारा-
लक्ष्य जीवन का प्यारा-वह ध्रुवतारा-
दूर हुआ वह बहा रहा है
उस अनंत पथ से करुणा की धारा |3

४.विधवाओं की पीड़ा का अहसास:-

स्त्री को मिला हुआ सौन्दर्य उसका उपहार होता हैं | कवि का मन रूपी भँवरा अक्सर उसके सौन्दर्य रस को कविता में अभिव्यक्त करता हैं | किन्तु निराला जैसा कवि जब स्त्री का वह रूप जिसे विधवा कहा जाता हैं | तब उसका मन रूपी भंवरा उसके सौन्दर्य रस का ना ही पान करता हैं और न उसे कविता में अभिव्यक्त करता हैं | बल्कि उसकी वेदना, पीड़ा, दर्द, उपेक्षा, अपमान, अन्याय-अत्याचार को महसूस करता हैं | और उसके दु:ख को अपना दु:ख समझकर स्वयं भी दु खी होता हैं

है करुणा-रस से पुलकित इसकी आंखे
देखा,तो भीगी मन-मधुकर की पाँखे;
मृदु रसावेश में निकला जो गुंजार
यह और न था कुछ,था बस हाहाकार !4

कवि कहता है कि जब उसने विधवा स्त्री की करुणा रस से युक्त अर्थात दु खी आँखों से आसुओं बहाते हुए देखता हैं, तब उसके मन रूपी भंवरे का पंख उस आँसुओं से भीग जाता हैं वह तो बड़ी ख़ुशी में पुष्प रस को प्राप्त करने के लिए निकला था किन्तु उसने चहुँ ओर देखा तो मात्र विधवाओं का दर्द ही दर्द हाहाकार के रूप में दिखायी दिया |

५.विधवाओं का उपेक्षित जीवन:-

विधवाओं का जीवन उपेक्षा और अपमान से भरा हुआ हैं | वह अकेले में अपने अभिशप्त जीवन पर चुप-चाप रोती रहती हैं | मानो समाज को उससे कोई लेना देना नहीं हो | उसके इसी दर्द हो अभिव्यक्त करते हुए निराला जी कहते हैं,

उस करुणा की सरिता के मलिन पुलिन पर,
लघु टूटी हुई कुटी का मौन बढाकर
अति छिन्न हुए भीगे अंचल में मन को-
दु :ख-रूखे सूखे अधस्त्रस्त चितवन को
वह दु निया कीनजरों से दूर बचाकर,
रोती है अस्फुट स्वर में;
दु :ख सुनता है आकाश धीर,निश्चल समीर,
सरिता की वे लहरें भी ठहर-ठहरकर |5

दु :ख,पीड़ा, करुणा की नदी रूपी विधवा स्त्री अपने मलिन जीवन में अकेले छोटी से कुटिया के समान मौन रहकर जहाँ-तहां फटे हुए अपने रो-रो कर भीगे हुए अंचल में वह अपने मन को सारी दु निया की नजरे बचाकर बिना आवाज किये रोती हैं | उसका दु :ख समाज में कोई नहीं सुनता हैं | उसका दु :ख मात्र आकाश,वायु,नदी की लहरों के रूप में प्रकृति ही सुनती हैं | वह विशाल धीर आकाश, चहुँ ओर बहने वाली हवायें, नदियों के किनारे रुक-रुक कर आनेवाली लहरे |

६.विधवाओं के प्रति समाज का दायित्व:-

कवि जब यह देखता हैं कि विधवा स्त्री समाज का एक अभिन्न अंग होते हुए भी कोई उसके प्रति सहानुभूति नहीं रखता | उसके दर्द,पीड़ा को नहीं समझता | उसे संत्वना देने के बजाये जब उसे और भी पीड़ित करने का कारन बनते देखता हैं | तब वह इस पूर्वाग्रह समाज से प्रश्न पूछता हैं कि,

कौन उसको धीरज दे सके ?
दु :ख का भार कौन ले सके?
यह दु :ख वह जिसका नहीं कुछ छोर है,
दैव अत्याचार कैसा घोर और कठोर है !
क्या कभी पोछें किसी ने अश्रु-जल ?
या किया करते रहे सबको विकल ?
ओस-कण-सा पल्लवों से झर गया
जो अश्रु,भारत का उसी से सर गया |6

कवि जब यह देखता हैं कि उस विधवा स्त्री के दु :ख पूर्ण उपेक्षित, अकेले, शांत, करुणा से भरे हुए जीवन में उसका दु :ख कोई नहीं सुनाता | कोई समझ नहीं सकता या समझना नहीं चाहता | ऐसे में वह समाज को अपने दायित्व के बोध का अहसास करवाते हुए उसने प्रश्न पूछते हैं कि विधवा स्त्री भी इस समाज का अंग हैं | उस स्त्री को

कौन धीरज देगा ? उसके दु:ख के भार को कौन हैं, जो कम कर सकता हैं ? उसका वह दु:ख आनंत जिसका कोई किनारा नहीं हैं | भाग्य का उस पर यह कैसा घोर और कठोर अत्याचार हैं, जो कभी थमनेवाला ही नहीं हैं ! कभी विधवाओं के ऐसे दु:ख्दर्द और आसुओं को पहचान कर उसके आसूं किसी ने पोछें हैं ? या समाज के बंधनों को मान कर उलटे स्त्रियों के दु:ख को और भी बढ़ाते रहे ? या फिर पल्लवों पर पड़ने वाले ओस के बूंद जो कुछ समय के लिय सौन्दर्य बढ़ाते हैं और फिर लुडक जाते हैं| क्या तुम्हारे आँसू विधवाओं के प्रति निकले भी हैं तो वह मात्र ओस कण के समान दिखावटी थे | इसीलिए विश्व में भारत का जो नाम था | जिस कारण भारत का सर ऊँचा था | आज विधवाओं के इस दयनीयदु:ख, उपेक्षा, करुणा से भरे जीवन के कारण भारत का सर आज निचा हो गया हैं |

वस्तुत:

कवि भारत में विधवाओं की जब दयनीय स्थिति देखता हैं | तब विधवाओं के प्रति जो समाज का दृष्टिकोण हैं, वह उसे बदल कर विधवाओं के प्रति नया दृष्टिकोण रखता हैं | उसे पूजनीय,पवित्र,साधना रथ, सहनशील, शांत भाव में लीन, आदि रूपों में प्रस्तुत करते हुए उसके दु:खपीड़ा,वेदना, करुणा,समस्याओं के प्रति जागृत महसूस करवाते चलता हैं| और समाज के सम्मुख कुछ प्रश्न उपस्थित करवाता हैं | विधवा भी समाज का अभिन्न अंग हैं | उसे समाज पुनर्विवाह का अधिकार तो नहीं देता साथ ही उसकी जीवन भर उपेक्षा,अपमान करता हैं | तथा उसे विभिन्न नियमों में बाँध कर अकेले में सिसकने के लिए छोड़ देता हैं | उसका जीवन बंदिश त कर देता हैं | ऐसे में उसके दु:ख्दर्द,अपमान,पीड़ा को किसी ने महसूस किया हैं ? कभी उसके आँसू पोंछे हैं ? कभी उसकी इच्छाओं-आकांक्षाओं के बारें में सोचा हैं? अंत में वह ऐसे समाज के घृणा करते हुए उनके इसी कृत के कारण ही सारे विश्व में भारत का सर झुका हुआ मानता हैं|

कवि विधवाओं के दर्द्दु:खपीड़ा को स्वयं महसूस कर समाज को महसूस करवाकर समाज में विधवाओं कीस्थिति में सुधार लाना चाहता हैं|

संदर्भ :-

1. कविता-विधवा-सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सम्पादक:-ललित कुमार पृष्ठ-kavitakosh.org
2. कविता-विधवा-सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सम्पादक:-ललित कुमार पृष्ठ-kavitakosh.org
3. कविता-विधवा-सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सम्पादक:-ललित कुमार पृष्ठ-kavitakosh.org
4. कविता-विधवा-सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सम्पादक:-ललित कुमार पृष्ठ-kavitakosh.org
5. कविता-विधवा-सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सम्पादक:-ललित कुमार पृष्ठ-kavitakosh.org
6. कविता-विधवा-सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सम्पादक:-ललित कुमार पृष्ठ-kavitakosh.org